

i =k dh | eL; | k, a , oa | ek/kku

Shravan Kumar Paswan, Research Scholar

PG. Dept. of Hindi, T.M.Bhagalpur University Bhagalpur

यकद्रा= ds egRoi || kL Lr#k | ekpkj i = dk thou e# vR; f/kd egRo gA ekuo ds ekufI d fodkl ds fy,
यह परम आवश्यक है। राष्ट्र के विकास vkj ml dh i#fr e# | ekpkj i =k dk egRoi || kL ; kxnku jgk gA
समाचार पत्र और पत्रिकाएं राष्ट्र की नियति को स्वरूप प्रदान करने और उस निर्माण के सशक्त साधन हैं,
सूचना और शिक्षण के अलावा सरकार जो जनता के बीच साथर्क सौहार्द पैदा करने में भी सहायक होता है।

किसी भी प्रगतिशील लोकतंत्रात्मक समाज में समाजपत्र और पत्रिकाओं का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण
gA | ekpkj i = egRoi || kL | puvk dh og | kexh t#krk g# ftI ds vk/kkj ij turk vi us Q# ys djrh gA
वह इस निरंतर, परिवर्तनशील, दुनिया के भीतर अपने देश की स्थिति औj u#fr; k ds i#fr ukxfjd pruk
mRiUu djrk g# rFkk turk dks jk"Vh; y{; k dh ikflr ds fy, l#fBr djrk gA ; g ikBdk dh
vkdka#kkvk# | eL; kvk vkj fpUrkvk dks i#rcf/kr] muds n#Vdks k dks i#jofr# rFkk Hkfo"; dk fuekz k vkj
मार्ग दर्शन करता है।

; ह पाठकों की आशाओं, आकांक्षाओं, समस्याओं और चिन्ताओं को प्रतिबंधित, उनके दृष्टिकोण को
परिवर्तित तथा भविष्य का निर्माण और मार्ग दर्शन करता है। किसी भी विकासशील अर्थ व्यवस्था के लिए यह
आवश्यक है कि उसके भीतर शिक्षा के स्तरों और लोकतंत्र की म#k#k# e# ftI ek=k e# of) gk# ml h ek=k e#
| ekpkj i =k dk Hkh fodkl gkA

fglnh i=dkfjrk ds fodkl ea fcgkj dk ;kxnu cMk gh egRoi wkl jgk gA fcgkj dh fglnh i=dkfjrk dk bfrgkl 100 o"kl i kphu gA 1974 bD l s vuojr ; gka l s fglnh i = if=dk, a fdl h u fdl h रूप में प्रकाशित हो रही हैं। कभी यह कहा जाता था कि पत्रकारिता के लिए बिहार मरुभूमि है लेकिन अब यह i wkl% fl) gks x; k gS fd fcgkj i=dkfjrk ds fy, e: Hkfe ugha gA fcgkj us fglnh i=dkfjrk dh vusd egRi wkl v[kckj vkj v[kckj unhl fn, A ; gk ds vusd ri Loh i=dkjka us fcgkj ds ckj vkdj Hkh fglnh पत्रकारिता के उन्नयन एवं विकास में अपने हाड़ और मांस का गारा-चुना लगाया। पं० ईश्वरी प्र० शर्मा, पं० सकल नारायण शर्मा, आचार्य शिव पूजन सहाय, बाबू यशोदानन्दन अखौरी, श्री लालता प्र० वर्मा, ठाकुर रामाशीष fl g] Jh ; ky किशोर सिंह शास्त्री, श्री पन्नालाल शास्त्री, डॉ० भवानी दयाल आदि अनेक ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने आवश्यकतानुसार राज्य के बाहर के प्रदेशों में जाकर और जमकर काम किया।

fglnh i=dkfjrk tc mlur voLFkk ea gA fodkl dh l kjh efty og ikj dj pph gA vkt fcgkj ds dkne कोने से पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं, बिहार से प्रकाशित होने वाले पत्रों ----- n fud] l klrkfgd] ikf{kd] ekfl d] =; ekfl d ----- i=ka dk fhkfo"; mTtoy gA dktin ml ds cgr l kjh l eL; k, a, s h gS ftuds dkj. k fcgkj dk gh ugha oju- l Ei wkl Hkjr ds i=ka dk Hkfo"; v/kdkje; gA i kj fhkd l eL; k &

समाचार पत्रों का प्रकाशन सामान्य काम नहीं है। पत्रों के प्रकाशन के पूर्व प्रकाशक एवं संपादक को एक बहुत बड़ी प्रक्रिया से गुजरनी पड़ती है। पत्रों के प्रकाशन के पूर्व सरकार से इसके प्रकाशन के लिए vupefr yuh i Mrh gA i = ; k if=dk dks i athdr djokuk i Mrk gA bl ifdz k ea cgr vf/kd l e; yx जाता है। यही कारण है कि कभी-कभी ऐसे ही पत्र प्रकाशित होते हुए दिखाई पड़ते हैं जिनका पंजीयन नहीं gvk jgrk gA yfdu fdl h Hkh fLFkr ea l iknd dks l jdkj l s i = dks i athdr djokuk gh i Mrk gA पंजीचन के समय संपादक एवं प्रकाशक को कोई तो बहुत सारी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाते हैं। इसका

dkj.k g\$ ----- mÜkjnkf; Ro dk cks>A l Hkh vi us dÜkD; vkj mÜkjnkf; Ro dk fuokjg Bhd l s djrs g\$ ftl ds dkj.k i =ka ds idkशन में जल्दी कठिनाई नहीं आ पाती है।

आधुनिक उपकरणों और मशीनों का अभाव –

orleku ; [x] foKku dk ; [x] g\$ bl oKkfud ; [x] e\$ ekuo dks l fo/kk i nku djus ds fy, vusd प्रकार के उपकरणों और मशीनों का निर्माण किया गया है। सच तो यह है कि यह युग ही मशीनों का युग है। बावजूद इसके भारत वर्ष में प्रेस के आधुनिक उपकरणों और मशीनों का अभाव है। आज भी हम अन्य देशों की rnyuk e\$ l ekpkj i = if=dkvka , oa i d dh nf"V l s fi NM\$ gq g\$; gka l [n] i d dh 0; oLFkk ugha g\$

आज संसार के अन्य देशों में i d m | ks vk/kfudre rdudh ds ykHk mBk jgk g\$ gekjs ; gka ml s पुराने मशीनों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। इसके आधुनिकीकरण की दृष्टि से यह आवश्यक है कि फोटो-टाइप, l fVx] l ekpkj i d'k k rFkk Ni kbz ds fy, vk/kfudre mi dj .kka dk Hkkjh ek=k e\$ vk; kr fd; k tk; A bl क्षेत्र में आवश्यक पूंजी की मात्रा उपलब्ध पूंजी की तुलना में कहीं अधिक है। सरकार को इन उपकरणों की खरीद के लिए वित्तीय संस्थानों से सस्ते दीर्घ कालीन ऋण प्रदान करवाना आवश्यक है।

l xBu dh l eL; k, a &

i =&i =dkjka ds 0; fDrRo dh i frNfo g\$ i =dkjka dk l Ei w kz 0; fDrRo i =ka e\$ Li "V nf"V xkpj gkrk g\$ i = ij i =dkjka ds 0; fDrRo dh , d vfeV Nki i Mrh g\$ i =ka dk Lrj i =dkjka ds 0; fDrRo ij mudh l xBu {kerk ij fuHkj} djrk g\$, d l e; Fkk tc i =dkj n?kkfp ds l eku vi uh vLFk; ka dks i =ka के प्रकाशन, प्रकज vkj i d kj e\$ ----- पत्रों के प्रकाशन में लगे रहते थे। लेकिन आज समय ने करवटें cnyh g\$ bu fnuka egku i =dkjka dk vHkko l k fn[k jgk g\$ egku i =dkjka ds vHkko e\$ l [n] i =ka dk समय पर प्रकाशन संभव नहीं हो पा रहा है।

vkt l k/kkj .kr% os gh ykx i =ka ds l oknkrk gñ tks thodki ktlu ds fy, i =ka l s fHKUu nil jk Hkh 0; ol k; djrs gñ , d s ykx l e; fudkydj l okn r\$ kj djrs gñ vkñ i =ka dks Hkstrs gñ i ; klr l e; ugha fey i kus ds dkj .k os vR; f/kd egur ugha dj i krs gñ , d s i =dkj ka dks i kfj Jfed Hkh cgr de gh fey i krk gñ

पत्र एवं पत्रिकाओं में कार्य करने के बाद भी पत्रकारों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति संभव नहीं हो पाती है। एसी स्थिति में निशा के घने कोहरे में पत्रकारों का रहना कोई बड़ी बात नहीं है। i =dkj i =ka ea काम तो अवश्य करते हैं। लेकिन उन्हें अपना भविष्य समुज्ज्वल और सुरक्षित नहीं दिखाई पड़ता है। उनके सामने चिकित्सा और निवास की समस्याएं मुंह बाये खड़ी रहती है, उन्हें भविष्य में उन्नति और लाभ की आशा Hkh fn [kkbz ugha i Mfh gñ ftl ds dkj .k eu yxk dj i jh fu"Bk vkñ /k\$ l ds l kFk dke ugha dj i krs gñ

इन दिनों जितने सारे पत्रकार काम कर रहे हैं, इनमें अधिकांश पत्रकार ऐसे हैं जिन्होंने अपना परिश्रम और अनुभव के आधार पर कार्य में दक्षता प्राप्त की है, अबकि आवश्यकता इस बात की पत्रकारों के लिए एक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

vkt l Ei u kZ 0; ol k; Jfed l xBuka ij vk/kkfjr gñ tc Jfedka ea l xBu ugha jgrk gñ rks ekfydka }kjk mudk 'kks'k.k /kMfys l s fd; k tkrk gñ Jfedka dk mfpr /; ku ugha j [kk tkrk gñ ; g Li "V gñ fd i =dkfjrk , d 0; ol k; gñ , d h fLFati में पत्रकारों में संगठन का होना अत्यंत आवश्यक है। वह संगठन ftruk gh vf/kd l qn+ gksxk i =ka dk Lor= vflrRo mrug gh vf/kd cuk jgxa l jdkjh ra= dh i dM+ i =ka ij mrug gh vf/kd <hyh gksxhA l xBu ds l keus gh l jdkj Hkh ?kq/us Vsdrh gñ vU; Fkk og fd l h dh ijokg ugha djrh gñ i =dkjka ds ikl rks v[kckj ts k vpid vL= gñ ftl ds dkj .k l jdkj dks >pluk i Mrk gñ jk"Vh; vkñ i karh; Lrj ij i =dkjka dk , dk/k l xBu rks gñ yfdu og vR; f/kd l fdz vkñ प्रभावशाली नहीं दिखाई पड़ता है। जब पत्रकारों का संगठन सुदृढ़ हो जk, xk rks i =ka dh l kjh l eL; k, a Lor% l qy>us yxsh rFkk l jdkj Hkh bl vkñ 'kh?kz /; ku nus yxshA

लेफ़्टर एकेके एफोक्की उ दक उ फेय इ कुक &

लेकपक्य इ इफ=दक्वका धि व्केनुह दक ज्कर फोक्की उ ग्वा इ क्जत्क ए ग्गए फनुका र्द इ=का द्कस ल्ज्दक्यह फोक्की उ मि य्क/क उग्हा ग्कस इ क्कस फ्कस य्फदु दक्य्कल्ज ए म्ल स ल्ज्दक्यह फोक्की उ इ क्लर ग्कस य्क्स ग्वा इ इफ=दक्वका द्कस फोक्की उ इ क्लर द्जुस द्कस वुसद ज्कर ग्वा फ्तु इ=का द्कस इ क्जत्क ल्स फोक्की उ म्फए एकेके ए फेयुस य्क्कस ग्वा म्ल धि व्क्फ्कद फ्ल्फ्कए ल्क्ज्कह प्यह त्कह ग्वा य्फदु फ्तुल्ग फोक्की उ म्फए एकेके ए उग्हा फेय इ क्कक ग्कस मुध्द आर्थिक स्थिति चिन्तनीय हो जाती है और प्रकाशक को विवश होकर पत्र को बंद कर देना पड़ता है।

व्क ले; व्क ख; क ग्कस त्कफ्द ल्ज्दक्य द्कस इ द्कस इ फ्र व्कह उहए इ ज् उ; स फ्ल्जस ल्स फोपक्य द्जुक चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो देश भर में प्रकाशित होने वाली ग्गए [; द इ=का द्क ह्कफो"; [क्कस ए इ म्+ त्क, ख्क

समाचार पत्र और पत्रिकाओं की नाजुक अर्थव्यवस्था को देखकर घोर निराशा हो रही है ----- मुद्द भविष्य के प्रति। इन दिनों सरकार द्वारा इस भिषण स्थिति से निपटने के लिए देश के समाचार पत्रों और इफ=दक्वका का विज्ञापन की दरों में वृद्धि का अंतिम और हताशपूर्ण कदम उठाने के लिए विवश किया जा रहा है लेकिन इसके फलस्वरूप विज्ञापनों की मात्रा में भारी गिरावट आ सकती है, जिससे देश के आर्थिक विकास पर क्ज्क इ ह्कको इ म्क्क

व्फ्र्ज्दए य्क्क द्कस इ ज्क द्जुस द्कस फ्य, लेकपक्य इ=का व्क इफ=दक्वका द्कस फ्कध् ए; ए व्क व्फ/कद वृद्धि करनी होगी किन्तु इससे प्रेस के इस बुनियादी प्रयोजन को ठेस लगेगी कि वह देश भर में अधिकाधिक य्क्क र्द इ ग्गए ल्दए फ्कध् ए; ए व्फ्कक फोक्की उ धि न्ज्क ए एफ) ल्स लेकपक्य धि द्क व्क्फ्कद फ्ल्फ्कए ल्क्ज्क ल्दरि ग्वा य्फदु त्: ज् र ब्ल् क्क धि ग्कस फ्द क्फु; क्नह म्क इ क्नु य्क्क ए ह्कक्यह द्फे धि त्क, ए

आज आयात नीति पर फिर फिर से विचार करना आवश्यक हो गया है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि देश के भीतर अखबारी कागज के उत्पादन में उत्तमता तथा मात्रा में वृद्धि और अपेक्षाकृत सस्तेपन पर जो ज्क त्क, ए फ्तु ल्स व्क; क्फ्र व्क [क्कक्यह द्कख्त इ ज् गेक्क्यह फुह्कक्यह द्कक्यह एकेके ए दे ग्कस ल्दए ह्कक्यह र्द ए ग्क

फोटो टाइप सेटिंग, समाचार प्रेषण तथा छपाई के लिए आधुनिकतम उपकरणों का निर्माण किया जाना आवश्यक है। अगर इन उपकरणों का यथाशीघ्र न हो सके तो तत्काल विदेशों से आयात किया जाए। लेकिन इन सभी उपकरणों को आयात शुल्क से मुक्त रखा जाए ताकि पत्रों के प्रकाशन में किसी भी प्रकार की कठिनाई न हो।

I jdkj dks l ekpkj i = if=dkvka ds mTtoy Hkfo"; ds fy, fuEufyf[kr dk; l djuk pkfg, %&

1- i d ds i kFkfedrk okys m | ksx ds : i ea ekl; rk nuh pkfg, A

2- cfu; knh mRi knu ykxrka ea dVksrh djus ea enn i gpkuh pkfg, A

3- अखबारी कागज और मशीनों के आयात के मामले में उद्धार नीति अपनानी चाहिए।

4- l ekpkj i = vkj if=dkvka dks foUkh; l LFkkuka l sych vof/k ds l Lrs __.k i nku djokuk pkfg, A

5- rFkk i k| kfxdh @ rduhdh ; x ea fMftVydEjs dk egRo c<+ x; k gA fMftVy dEjs ds l kFk

vU; mi dj. kka ds Øe ea Hkh dkOh 0; ; gkkr gA , d h fLFkr ea l jdkj }kj k i = i =dkjka dks l Lrs

दर पर आसानी से तकनीकी उपकरणों को उपलब्ध करवाना आवश्यक है।

bu dfri ; mi k; ka ds }kj k i = vkj if=dkvka ds vuq kj dks l qic+ vk/kkj i nku fd; k tk

l drk g\$ rFkk bl ds Hkfo"; dks mTtoy fd; k tk l drk gA